नूतन
श्रीसत्यनारायणकथामृतम्
हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित
रचयिता
सतसम्प्रदायरत्न
पं. विष्वक्सेनाचार्य गुरु जी

नूतन

श्रीसत्यनारायणकथामृतम्
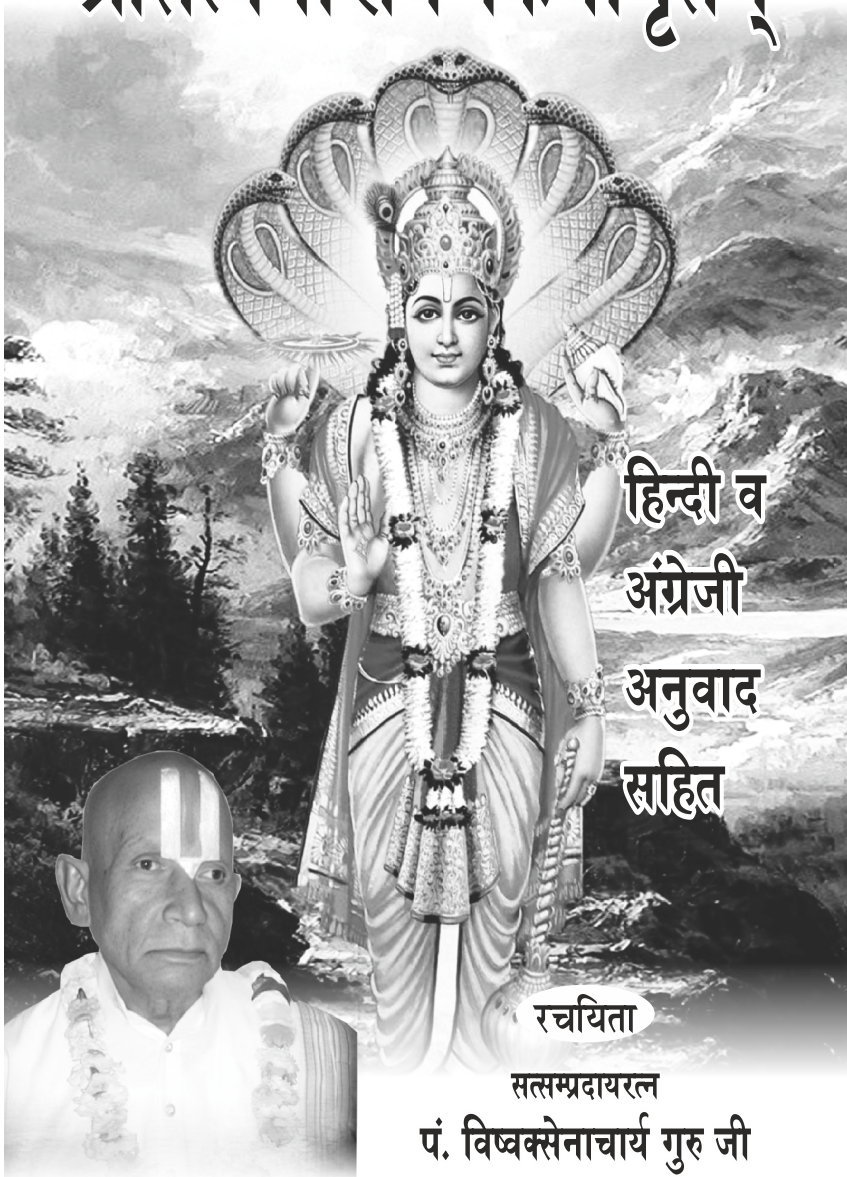
हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित

रचयिता

सतसम्प्रदायरत्न

पं. विष्वक्सेनाचार्य गुरु जी

सम्पादक/प्रकाशक :

आचार्य पं. भगवती प्रसाद शुक्ल

श्री राधाकृष्ण मंदिर

रादौर (यमुनानगर) हरियाणा ।

मो. 9416267224

रूपसज्जा : एन. के. धीमान

मुद्रक : **हवाई प्रिंटर्स**

रादौर (यमुनानगर) हरियाणा ।

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ

श्री गुरु पूर्णिमा 21 जुलाई सन् 2024, सम्वत् 2081

मूल्य : अमूल्य

पं. विष्वक्सेनाचार्य गुरु जी के द्वारा रचित ग्रंथ

1. सत्पाथेयं-सत्पथमार्तण्डश्च
2. मानवता की परख
3. धर्म और अधर्म (हिन्दी निबन्ध)
4. राष्ट्रिय चिन्तन और प्रशिक्षण
5. गीता गंगा (स्रग्धरा)
6. गीता गंगा (द्रुतविलम्बिता)
7. गीता गंगा (सुक्ति सौरभ)
8. भावकुसुमाञ्जलिः
9. शीलसाहित्यम
10. सूक्ति मुक्तावली
11. हर पल अपनी पहचान
12. सनातन संस्कृति सुरक्षा संसद
13. अज्ञान और विज्ञान
14. परमार्थ प्रकाश
15. प्रतिबुद्ध मतदान
16. षट्पदी
17. श्रीसत्यनारायणकथामृतम

ग्रंथ प्राप्ति का स्थान

आचार्य विष्णुदत्त पांडेय

शारदा नगर, लोहरदगा (झारखंड)

मो. : 9835976162

प्रस्तावना

भारतीय सनातन परम्परा में किसी भी मांगलिक कार्य का प्ररम्भ श्री गणेश पूजन से तथा उस कार्य की पूर्णता भगवान श्री सत्यनारायण की पूजा एवं कथा श्रवण से समझी जाती है। आमतौर पर देखा जाता है किसी शुभ काम से पहले या मनोकामनाएं पूरी होने पर सत्यनारायण व्रत की कथा सुनने का विधान है। सनातन धर्म से जुड़ा शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने श्रीसत्यनारायण कथा का नाम न सुना हो। इस कथा को सुनने का फल हजारों सालों तक किए गये यज्ञ के बराबर माना जाता है। शास्त्रों के मुताबिक ऐसा माना गया है कि इस कथा को सुनने वाला व्यक्ति अगर व्रत रखता है तो उसके जीवन के दुखों को श्री हरि विष्णु खुद ही हर लेते हैं। स्कन्द पुराण के अनुसार भगवान सत्यनारायण श्री हरि विष्णु का ही दूसरा रूप हैं। इस व्रत कथा की महिमा को भगवान सत्यनारायण ने अपने मुख से देवर्षि नारद को बताया है। पुराणों में ऐसा भी बताया गया है कि जिस स्थान पर भी श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा होती है, वहां गौरी-गणेश, नवग्रह और समस्त दिक्पाल आ जाते हैं। केले के पेड़ के नीचे अथवा घर के ब्रह्म स्थान पर पूजा करना उत्तम फल देता है। भोग में पंजीरी, पंचामृत, केला और तुलसी दल विशेष रूप से शामिल करें। सिर्फ पूर्णिमा को ही नहीं परिस्थितियों के मुताबिक किसी भी दिन कथा सुनी जा सकती है, बृहस्पतिवार को कथा सुनना विशेष लाभकारी होता है। भगवान तो बस भाव के भूखे हैं, मन में उनके प्रति अगर सच्चा प्रेम है तो कोई भी दिन हो प्रभु की कृपा बरसती रहेगी। इस कथा के प्रभाव से खुशहाल जीवन, दाम्पत्य सुख, मनचाहे वर-वधु, संतान, स्वास्थ्य जैसी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। अगर पैसों से जुड़ी कोई समस्या है तो ये कथा किसी संजीवनी से कम नहीं है। तो जब भी मौका मिले भगवान की कथा सुने और सुनाएं। परमपूज्य तपोनिष्ठ परम विद्वान श्री विष्वक्सेनाचार्य जी (गुरु जी) के द्वारा अनेक रचनाओं में यह सबसे अन्तिम रचना है। श्री गुरु जी ने इस कथा के माध्यम से इसमें मूल सत्-तत्व परमात्मा का ही प्रतिपादन किया है। इस मूल कथा का हिन्दी अनुवाद गुरु जी के सुपुत्र श्री आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय (लोहरदगा) एवं श्री आचार्य श्री चैतन्य (सहारनपुर) के द्वारा एवं अँग्रेजी अनुवाद श्रीमती लक्षिता शर्मा एवं श्री अभिमन्यु शर्मा (न्यूजीलैण्ड) के द्वारा किया गया। इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मेरे प्रिय शिष्य, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) निवासी सागर फ्यूचर प्वाइंट के संचालक श्री पं. वीरेन्द्र कुमार गौड़ एवं ब्याना, करनाल (हरियाणा) निवासी, ब्याना ट्रेडिंग कम्पनी के संचालक श्री नीरज भारद्वाज को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने ग्रंथ की छपाई का

दायित्व अपने ऊपर लेकर सनातन धर्म के प्रचारार्थ सम्पूर्ण खर्च वहन किया। श्रद्धापूर्वक भक्तिभाव से पूजन, कथा श्रवण एवं प्रसाद ग्रहण आदि के द्वारा सत्यस्वरूप भगवान सत्यनारायण की उपासना से लाभ उठाते हुए अपने जीवन में सत्य की मर्यादा को स्थापित करने का व्रत लेना चाहिए। इसी उद्देश्य से श्री गुरु जी को श्रद्धांजलि स्वरूप इस 'श्री सत्यनारायण कथा' का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि आप इस कथा से लाभान्वित होंगे।

आचार्य भगवती प्रसाद शुक्ल
श्रीमद्भागवत प्रवक्ता, ज्योतिषाचार्य

सन्दर्भ

पुराकाल में शौनकादि ऋषि नैमिषारण्य में महर्षि सूत जी से प्रश्न करते हैं कि लौकिक कष्टमुक्ति, सांसारिक सुख समृद्धि एवं पारलौकिक लक्ष्य की सिद्धि के लिए सरल उपाय क्या है? महर्षि सूत शौनकादि ऋषियों को बताते हैं कि ऐसा ही प्रश्न नारद जी ने भगवान विष्णु से किया था। भगवान विष्णु ने नारद जी को बताया कि लौकिक क्लेशमुक्ति, सांसारिक सुखसमृद्धि एवं पारलौकिक लक्ष्य सिद्धि के लिए एक ही राजमार्ग है, वह है सत्यनारायण व्रत। सत्यनारायण का अर्थ है सत्याचरण, सत्याग्रह, सत्यनिष्ठा। संसार में सुखसमृद्धि की प्राप्ति सत्याचरण द्वारा ही संभव है। सत्य ही ईश्वर है। सत्याचरण का अर्थ है ईश्वराराधन, भगवत्पूजा। सत्यनारायण व्रत कथा के पात्र दो कोटि में आते हैं, निष्ठावान सत्यव्रती एवं स्वार्थबद्ध सत्यव्रती। काष्ठ-विक्रेता भील भी अति निर्धन था। किसी तरह लकड़ी बेचकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। उसने भी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ सत्याचरण किया, सत्यनारायण भगवान की पूजार्चा की। राजा उल्कामुख भी निष्ठावान सत्यव्रती थे। वे नियमित रूप से भद्रशीला नदी के किनारे सपत्नीक सत्यनारायण भगवान की पूजार्चना करते थे। सत्याचरण ही उनके जीवन का मूल मन्त्र था। दूसरी तरफ साधु वणिक एवं राजा तुंगध्वज स्वार्थबद्ध कोटि के सत्यव्रती थे। स्वार्थ साधन हेतु बाध्य होकर इन दोनों पात्रों ने सत्याचरण किया, सत्यनारायण भगवान की पूजार्चना की। साधु वणिक की सत्यनारायण भगवान में निष्ठा नहीं थी। सत्यनारायण पूजार्चा का संकल्प लेने के उपरान्त उसके परिवार में कलावती नामक कन्या-रत्न का जन्म हुआ। कन्या जन्म के पश्चात उसने अपने संकल्प को भुला दिया और सत्यनारायण भगवान की पूजार्चा नहीं की। उसने पूजा कन्या के विवाह तक के लिए टाल दी। कन्या के

विवाह के अवसर पर भी उसने सत्याचरण एवं पूजार्चना से मुंह मोड़ लिया और दामाद के साथ व्यापार यात्रा पर चल पडा। दैवयोग से रत्नसारपुर में श्वसुर दामाद के ऊपर चोरी का आरोप लगा। यहां उन्हें राजा चंद्रकेतु के कारागार में रहना पड़ा। श्वसुर और दामाद कारागार से मुक्त हुए तो श्वसुर (साधु वाणिक) ने एक दण्डी स्वामी से झूठ बोल दिया कि उसकी नौका में रत्नादि नहीं, मात्र लता-पत्र है। इस मिथ्यावादन के कारण उसे संपत्ति-विनाश का कष्ट भोगना पडा। अन्ततः बाध्य होकर उसने सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। साधु वाणिक के मिथ्याचार के कारण उसके घर पर भी भयंकर चोरी हो गई। पत्नी-पुत्र दाने-दाने को मुहताज। इसी बीच उन्हें साधु वाणिक के सकुशल घर लौटने की सूचना मिली। उस समय कलावती अपनी माता लीलावती के साथ सत्यनारायण भगवान की पूजार्चा कर रही थी। समाचार सुनते ही कलावती अपने पिता और पति से मिलने के लिए दौड़ी। इसी हड़बड़ी में वह भगवान का प्रसाद ग्रहण करना भूल गई। प्रसाद न ग्रहण करने के कारण साधु वाणिक और उसके दामाद नाव सहित समुद्र में डूब गए। फिर अचानक कलावती को अपनी भूल की याद आई। वह दौड़ी-दौड़ी घर आई और भगवान का प्रसाद लिया। इसके बाद सब कुछ ठीक हो गया। लगभग यही स्थिति राजा तुंगध्वज की भी थी। एक स्थान पर गोपबन्धु भगवान सत्यनारायण की पूजा कर रहे थे। राजसत्तामदांध तुंगध्वज न तो पूजास्थल पर गए और न ही गोपबंधुओं द्वारा प्रदत्त भगवान का प्रसाद ग्रहण किया। इसीलिए उन्हें कष्ट भोगना पड़ा। अंततः बाध्य होकर उन्होंने सत्यनारायण भगवान की पूजार्चना की और सत्याचरण का व्रत लिया। सत्यनारायण व्रत कथा के उपर्युक्त पांचों पात्र मात्र कथा पात्र ही नहीं, वे मानव मन की दो प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। ये प्रवृत्तियां हैं, सत्याग्रह एवं मिथ्याग्रह। लोक में सर्वदा इन दोनों प्रवृत्तियों के धारक रहते हैं। इन पात्रों के माध्यम से स्कंद पुराण यह संदेश देना चाहता है कि निर्धन एवं सत्ताहीन व्यक्ति भी सत्याग्रही, सत्यव्रती, सत्यनिष्ठ हो सकता है और धन तथा सत्तासंपन्न व्यक्ति मिथ्याग्रही हो सकता है। शतानन्द और काष्ठ विक्रेता भील निर्धन और सत्ताहीन थे। फिर भी इनमें तीव्र सत्याग्रहवृत्ति थी। इसके विपरीत साधु वाणिक एवं राजा तुंगध्वज धन सम्पन्न एवं सत्ता सम्पन्न थे। पर उनकी वृत्ति मिथ्याग्रही थी। सत्ता एवं धन सम्पन्न व्यक्ति में सत्याग्रह हो, ऐसी घटना विरल होती है। सत्यनारायण व्रत कथा के पात्र राजा उल्कामुख ऐसी ही विरल कोटि के व्यक्ति थे। पूरी सत्यनारायण व्रत कथा का निहितार्थ यह है कि लौकिक एवं परलौकिक हितों की साधना के लिए मनुष्य को सत्याचरण का व्रत लेना चाहिए। सत्य ही भगवान है। सत्य ही विष्णु है। 'सत्यं परं धीमहि' ऐसे सत्यस्वरूप परमात्मा नारायण का मैं ध्यान करता हूँ।

आचार्य विष्णुदत्त पाण्डेय

हिन्दी प्राध्यापक

शुभाशंसा

भारतवर्ष के प्रकांड विद्वान श्री डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय (विष्वकसेनाचार्य) गुरु जी के द्वारा रचित 'श्रीसत्यनारायणकथामृतम्' का हिन्दी अनुवाद करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं आचार्य पं. भगवती प्रसाद शुक्ल जी को साधुवाद देता हूँ जिनके अथक प्रयास के द्वारा ये ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठकजन इस ग्रंथ को पढ़कर भगवान हरि के कृपा पात्र बनेंगे।

आचार्य श्री चैतन्य जी महाराज
भागवत प्रवक्ता,
सहारनपुर

शुभाशंसा

हमारे परम पूज्य परम आदरणीय विद्वानों के शिरोमणि स्वामी श्री विष्वक्सेनाचार्य जी महाराज के द्वारा साधना से निर्मित यह कथा संसार के जीवों के कल्याण के लिए अवतरित हुई है। इस कथा के मूल का हिंदी अनुवाद परम पूज्य गुरु जी श्री विद्वान स्वामी जी महाराज के सुपुत्र आचार्य श्री विष्णु दत्त पांडेय जी एवं आचार्य श्री चैतन्य जी सहारनपुर के द्वारा एवं अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती लक्षिता शर्मा एवं श्री अभिमन्यु शर्मा जी के द्वारा किया गया है। यह कथा किसी संजीवनी से कम नहीं है। इस कथा को जब भी मौका मिले तब अपने सभी प्रेमियों को कथा का श्रवण कराएँ एवं स्वयं भी इस कथा का लाभ प्राप्त करें। यह कथा तीनों तापों का नाश करने वाली है। जो मनुष्य व्रतपूर्वक ,नियमपूर्वक, संयम से यदि इस सत्यदेव भगवान की कथा का संकल्प अपने जीवन में धारण करे तो उनके सभी मनोवांछित फलों की प्राप्ति उन्हें अवश्य होगी। इस कथा को प्रकाशित करने में श्री पंडित भगवती प्रसाद शुक्ल जी ने अपना विशेष योगदान दिया और इसे सर्वजन सुलभ बना दिया। इसके लिए मैं उनके प्रति अपने हृदय की गहराई से आभार प्रकट करता हूँ। इस कथा का सर्वत्र प्रचार हो। सनातन धर्म की प्रतिष्ठा बढ़े एवं इससे सभी का कल्याण हो, इसी शुभकामना के साथ जय श्रीमन नारायण। जय श्री राधेकृष्णा।

आचार्य विष्णुकांत
सेवाकुंज, वृंदावन
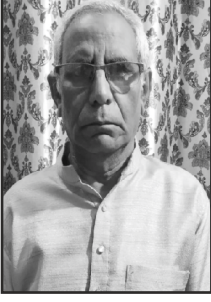
शुभाशंसा

प्रकांड विद्वान अति आदरणीय डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय जी, जिनका नाम वैष्णव सम्प्रदाय की परंपरा मे विष्वकसेनाचार्य है, उनके साथ विगत वर्षों में बिताए गए क्षण मानस पटल पर उभर आए। शायद यह सन 2021 या 22 का कोई दिन रहा होगा, ठीक तिथि स्मरण नहीं हो पा रही है। उनके साथ बैठने के क्रम में आदरणीय पंडित जी से अन्य चर्चाओं के साथ कभी-कभार प्रचलित सत्यनारायण कथा के संदर्भ में भी चर्चा चल जाती थी। मैं उनसे कई बार वर्तमान में प्रचलित सत्यनारायण कथा से भिन्न या संशोधित सत्यनारायण कथा लेखन के लिए अनुरोध करता रहता था। एक दिन अचानक उन्होंने फोन पर सूचना दी कि सत्यनारायण कथा लिख दी गई है आप आकर देख लें, मैं दूसरे दिन ही उनसे मिलने गया तो उन्होंने मुझे स्वरचित सत्यनारायण कथा दिखाई। इसे देखकर मुझे बहुत अधिक प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा--मैं लिख दिया हूँ, प्रचारित करना आप लोगों का काम है। यह संशोधित सत्यनारायण कथा समाज में प्रचारित हो, ताकि लोग सत्यनारायण कथा के महत्त्व को समझ सकें। जनमानस में भगवत प्रेम, भगवत भक्ति और भगवत श्रद्धा का भाव जागृत हो। मुझे भी यह कार्य करने के लिए उन्होंने प्रेरित किया था। मैं अपने मोबाइल में उक्त लिखित श्लोकों का फोटो करके ले आया था, किंतु जो कार्य उन्होंने मुझसे कहा था वह मैं नहीं कर सका, इसका मुझे बहुत पश्चाताप है। किंतु उनके विद्वान सुपुत्र विष्णु दत्त जी द्वारा यह सराहनीय कार्य संपन्न हुआ। उनका यह कार्य अपने पिताजी के प्रति भक्ति, श्रद्धा और प्रेम का द्योतक है। वे पिताजी द्वारा लिखित श्लोकों का मूल रूप में केवल सहेजा ही नहीं अपितु उसका हिंदी एवं अंग्रेजी में भी विद्वता पूर्ण एवं भावगम्य रूपांतरण इसकी विशेषता है। यह हिंदी या अंग्रेजी में रूपांतरण केवल नीरा-कोरा अनुवाद ही नहीं किन्तु यह विद्वता पूर्ण, भाव गमगम्य, भगवत्भक्ति से ओत -प्रोत मूल संस्कृत शलोक की व्याख्या भी है। इसके लिए विष्णु दत्त जी विशेष श्लाघा के पात्र तो हैं ही, मैं उन्हें बारंबार साधुवाद देता हूँ। समाज में जनमानस के बीच इसको प्रचारित करना एक गुरोत्तर कार्य है। आशा है कि पुरोहित वर्ग, कथा वाचक वर्ग यह पुनीत कार्य अपना कर्तव्य समझते हुए करेंगे और समाज को एक विशेष दिशा देंगे। इससे न केवल उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी अपितु पंडित जी के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी। पंडित जी की आत्मा का आशीर्वाद भी उन्हें प्राप्त होगा।

मैं इस पुस्तक के भविष्य के लिए, इसके संपादनकर्त्ता के लिए, इसको सुंदर बनाने में जिनका सहयोग है, उन सबों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करते हुए मंगल कामना प्रकट करता हूँ।

वैद्यनाथ मिश्र

राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार प्राप्त,

वास्तव्य-- पतराटोली, लोहरदगा (झारखंड)

शुभाशंसा

श्रद्धेय श्री डा. विन्ध्येश्वर पाण्डेय (पं. विष्वक्सेनाचार्य जी) के सानिध्य में संस्कृत महाविद्यालय में मैंने शिक्षण कार्य आरम्भ किया था। वे प्राचार्य के रुप में ही नहीं गुरु के रूप में भी मेरे लिए वन्दनीय हैं। मेरे शोधकार्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है। उनका रचना कौशल अद्वितीय था। संस्कृत भाषा में श्लोक रचना करने वाले विद्वान संस्कृत जगत में बहुत हैं, पर श्री पाण्डेय जी का वैशिष्ट्य यह था कि वह हिन्दी में लिखे हुए एक अनुच्छेद को देखकर एक बार में ही सुसंगत शब्दचयनों द्वारा श्लोकबद्ध करके लिख देते थे उनकी यह विद्वता की कला मैंने स्वयं देखी है। संस्कृत महाकाव्य 'राजतरंगिणी' में कश्मीर का इतिहास जहाँ तक लिखा गया था उसके आगे का इतिहास डा. पाण्डेय जी द्वारा श्लोकबद्ध किया गया है।

आज मैं डा. विन्ध्येश्वर पाण्डेय जी द्वारा रचित श्री नूतन सत्यनारायण कथा पर अपनी शुभाशंसा लिखते हुए अपार हर्ष व गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। प्रचलित सत्यनारायण कथा में अनेक दृष्टान्तों के द्वारा सत्यदेव के माहात्म्य को प्रस्तुत किया गया है। डा. पाण्डेय जी ने अपनी रचना में दृष्टान्तों की अपेक्षा प्रभु के सत्य स्वरूप को ही स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि प्रभु के सत्य स्वरूप, स्वभाव, गुण आदि को जानकर व समझकर ही लोगों का कल्याण हो सकता है और तभी वास्तविक भक्ति एवं श्रद्धा जागृत होगी। श्रद्धेय श्री डा. विन्ध्येश्वर पाण्डेय जी का यह प्रयास अवश्यमेव सनातनधर्मावलम्बियों व भक्तों को एक नयी दिशा प्रदान करेगा और इस कथा का पारायण व श्रवण करने से श्री सत्यदेव जी की कृपा व आशीर्वाद अवश्य प्राप्त होगा। श्री गुरु जी अब हमारे मध्य नहीं हैं। मैं इन शब्दसुमनों के द्वारा उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मैं श्री भगवती प्रसाद शुक्ल जी का भी आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा व प्रयास से यह रचना प्रकाशित हो रही है और मुझे यह पुनीत अवसर मिला है। इस शुभ कार्य में रत अन्य सभी महानुभावों को बहुशः साधुवाद।

डॉ. पं. नवीनचन्द्र शास्त्री

पूर्व प्राध्यापक, संस्कृत महाविद्यालय, झलोखर, हमीरपुर (उ.प्र.)

वर्तमान निवास - हल्द्वानी नैनीताल।

।। अथ श्रीसत्यनारायणकथामृतम् ।।

रचयिता - श्री डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय

''श्री विष्वक्सेनाचार्य जी'' (गुरु जी)

भूतपूर्व प्रधानाचार्य,
श्री भुवनेश्वरी महेश्वरानंद गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय,
झलोखर (हमीरपुर) उ.प्र.

सत्यं नारायणं देवं, तत्कथां पापनाशिनीम्।

श्रोतारमथ वक्तारं, सन्तं भक्तं विवेकिनम्॥ 1 ॥

नमामि परमात्मानं, चराचरपतिं प्रभुम्।

तं स्वतो विश्वकल्याणं, पूर्णकल्याणकारणम्॥ 2 ॥

सत्य स्वरूप परमतेजस्वी नारायण और उनकी पापनाशिनी कथा, यह कथा श्रोता और वक्ता तथा भक्तों एवं संतों को विवेक प्रदान करने वाली है। मैं उन चराचर के स्वामी परमात्मा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनके अस्तित्व के कारण विश्व का कल्याण होता है और सब प्रकार के कल्याणों के अधारभूत कारण हैं।। 1-2।।

I pay my respects to the true form of Supreme Lord Narayan and his sin-eliminating story, to the listeners and speakers of that story, to the wise devotees and saints, to the Supreme Lord, the Lord of the variable and the immovable. Due to whose existence the world is benefited and who is the cause of complete welfare. 1-2

विश्वस्य शाश्वतं मूलं, मूलानां मूलमुत्तमम्।

कार्यकारणरूपेण, कर्मरूपेण च स्थितम्॥ 3 ॥

जो सत्यदेव (नारायण) विश्व के सनातन मूल के भी मूल हैं। जो सभी कारणों के उत्तम कारण हैं तथा जो कार्य कारण तथा कर्म रूप से सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हैं।। 3।।

Satyadev (Narayan) is the eternal origin of the world. Which

is the best cause of all causes and which is situated causally and in the form of karma. 3..

यदनुस्मरणं पुण्यम्, अपुण्यं यस्य विस्मृतिः।

अशेषविश्वविज्ञानं, वास्तवीयस्य संस्तुतिः ॥ 4 ॥

उन सत्यनारायण भगवान का निरन्तर स्मरण ही सर्वोत्म पुण्य होता है और उनकी विस्मृति अपुण्य (पाप) होती है। जिनकी वास्तविक स्तुति से सम्पूर्ण विश्व का विशेष ज्ञान हो जाता है।।4।।

Whose remembrance is virtuous and whose forgetting is unworthy (sin). Whose real praise gives special knowledge of the entire world. 4.

अवतारा नृसिंहाद्या, असंख्या यस्य विग्रहाः।

विश्वं सर्वं हरे रूपं, इत्येव तु सताम्मतिः ॥ 5 ॥

नृसिंह आदि जिनके अवतार हैं। जिनके असंख्य विग्रह हैं। सम्पूर्ण विश्व हरि का रूप है। यही सज्जनों व शास्त्रों का मत है।। 5।।

Whose incarnation are Narasimha etc. Who has innumerable idols. The entire world is the form of Hari. This is the opinion of the gentlemen. 5.

तस्यैव पूजां लोकेऽस्मिन्, सर्वत्रैव प्रकुर्वताम्।

सतां तेषां च पूज्यानां, पादरेणुश्च वन्द्यताम् ॥ 6 ॥

उन्हीं सत्यनारायण की पूजा इस संसार में सभी लोग विशेष रूप से करें। साथ ही सभी लोग उनके पूज्य संतों के चरण धूलि की वन्दना भी करें। इसी से सबका कल्याण होगा।।6।।

Everyone in this world should especially worship him. Along with this, everyone should also worship the dust at the feet of their revered saints. This will benefit everyone. 6.

जगाद नारदो योगी, पूजा सत्यस्य लक्ष्यताम्।

अलक्षितस्य पूजायां, आसंगः परिवर्ज्यताम् ॥ 7 ॥

देवर्षि नारद ने कहा कि सत्यदेव की सगुण रूप में सभी लोग पूजा करें व समझें। जो अलक्षित हैं उन देवताओं की पूजा और उनके मानने वालों को पूरी तरह छोड़ दें। अपने से दूर हटा दें।।7।।

Devarshi Narad said that everyone should understand the worship of Satyadev. Completely abandon the worship of those deities who are untouchable and their followers. Remove it away from you. 7.

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, भुजमुद्धृत्य कथ्यते।

न सत्यादपरो देवो, नासत्यान्निरयः परः ॥ 8 ॥

सत्यस्य संस्तुतिश्चित्ते, नित्यमेव विधार्यताम्।

एतेन चित्तदोषाणां, प्रसंगोऽपि प्रवार्यताम् ॥ 9 ॥

यह सत्य है, सत्य है और पुनः सत्य है। मैं यह भुजा (हाथ) उठा के कह रहा रहा हूँ कि सत्य के अतिरिक्त, कोई श्रेष्ठ देव नहीं हैं। और असत्य से बढ़कर कोई नरक नहीं है। सत्य (देव) की स्तुति को नित्य ही अपने चित्त में धारण करें और इससे अपने चित्त दोषों के प्रसंग को पूरी तरह से दूर कर लें।। 8-9।।

It is true, true and true again. I am raising my hand and saying that apart from Truth, there is no better God. And there is no hell worse than untruth. Always remember the praise of Truth (God) in your mind and with this you will completely remove all the impurities in your mind. Do it. 8-9.

सत्यचित्ताः सत्यवाचः, सत्यकर्मपरा नराः।

पूज्याः सर्वोत्कर्षभावैरेत एव हरिः परः ॥ 10 ॥

जो व्यक्ति सत्य में अपने चित्त को लगातें हैं, जो सत्य वाणी बोलते हैं और जो सत्य कर्म करते हैं वे मनुष्य सबसे श्रेष्ठ भाव से पूज्य होते हैं और वे परमात्मा हरि के स्वरूप होते हैं।। 10।।

Those people who concentrate their mind on truth, who speak truthful words and who do righteous deeds, they are worshiped in the best sense and they are the form of God Hari. 10..

सृष्टिस्थितिलयैरीशं, विजयन्तो नरोत्तमाः।

हरिरेवेति सम्पूज्याः, साधुत्वं प्रकटो हरिः ॥ 11 ॥

संसार की सृष्टि, स्थिति (पालन) एवं प्रलय (नाश) ये तीनों कार्य उसी

परमेश्वर के द्वारा होते हैं, वही एक मात्र ईश्वर ही इनका कारण माना जाता है। ऐसे मनुष्य जो यह दृढ़ रूप से मानते हैं कि 'हरि ही सब कुछ हैं' उनमें प्रभु अपना प्रभाव प्रकट कर देते हैं। वे ही सच्चे संत कहलाते हैं।। 11।।

Seeing the actions of creation, sustenance (maintenance) and destruction (destruction), the best discriminating people consider God to be the cause. They cheer for him only. For this reason only Lord Hari is worshiped in the right way. Besides, gentleness and saintliness are the manifestations of Hari. 11..

साधुत्वं सकलं श्रीशे, महागुणगणार्णवे।

दयामूर्तौ सतां स्फूर्तौ, सर्वकर्मसमर्पणम्॥ 12॥

सम्पूर्ण साधुता लक्ष्मीपति नारायण में ही केन्द्रित है। वे भगवान नारायण समस्त महनीय गुणों के समुद्र हैं। वे दया की मूर्ति हैं। सभी संत महात्माओं की उन्ही में प्रवृत्ति होती है। विवेकी व्यक्ति अपने समस्त कर्मों को उन्हीं हरि के प्रति समर्पित करते हैं।। 12।।

Complete saintliness is centered in Lakshmipati Narayan only. That Lord Narayana is the ocean of all great qualities. He is the embodiment of kindness. All the saints and mahatmas have the same tendencies. Wise people dedicate all their actions to Lord Hari. 12.

कर्मार्पणैकबोधाय, नरजन्म ददौ हरिः।

स सद्भिः सदयैराप्यो, नाप्तश्चेज्जन्मनिष्फलम्॥ 13॥

कर्मों का समर्पण रूप एक मात्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए भगवान हरि ने हमें मनुष्य जन्म दिया है। वह महान ज्ञान दयालु सज्जनों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। यदि हमने जीवन रहते यह ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाया तो मानना चाहिए कि मनुष्य जन्म निष्फल (व्यर्थ) चला गया।। 13।।

Lord Hari has given us human birth to attain the only knowledge in the form of dedication of deeds. That great knowledge can be obtained only by kind gentlemen. If we have not been able to acquire this knowledge while alive,

then we should consider that our human birth has gone in vain. 13.

कृतं सर्वं हरेरेव, विदग्धैरवधार्यते।

तेन तेषाम्मतिः क्लेशकृत्येभ्यः प्रतिवार्यते ॥ 14 ॥

समस्त कर्म हरि के द्वारा ही किया गया है, ऐसा विद्वानों के द्वारा समझा जाता है। इसी कारण से सन्त महापुरुष अपनी बुद्धि को भगवान में ही लगाते हैं और कष्टकारी पापकर्मों से दूर रहते हैं।। 14।।

It is believed by the scholars that all the work has been done by Hari only. for this reason Saints and great men focus their intelligence only on God and stay away from painful sins. 14.

सकलं कर्म विश्वस्मिन्, हरिणैव विधीयते।

सर्वस्य कर्ता भोक्ता च, स सद्भिरवधार्यते ॥ 15 ॥

इस विश्व में सभी कर्मों को ईश्वर ही सम्पादित करते हैं। वही (ईश्वर) सभी कर्मो के कर्ता और भोक्ता हैं। ऐसा ज्ञान सन्त महात्मा अपने हृदय में धारण करते हैं।। 15।।

God alone performs all the actions in this world. He (God) is the doer and enjoyer of all actions. Saints and Mahatmas carry such knowledge in their hearts. 15.

अहम्ममाभिमानोत्थैः, अज्ञानैर्भवबन्धनैः।

मुक्तये क्रियते सद्भिः, मनसा सत्समागमः ॥ 16 ॥

मैं और मेरे का झूठा अभिमान ही अज्ञान कहलाता है। यह अज्ञान ही बन्धनकारी है, अज्ञान से मुक्ति के लिए सज्जन लोग मन से संत समागम करते हैं।। 16।।

To get freedom from ego, love, pride and ignorance that binds the world, good people join hands with saints from their heart. 16.

हरिरेव जगत्सर्वम्, जगदेव हरिः स्वयम्।

अभेदम्पश्यतां शश्वन्मुक्तिः करगता सदा ॥ 17 ॥

हरि ही समस्त संसार हैं और यह संसार भी स्वयं हरि का रूप है। इन

दोनों में निरंतर अभेद देखने वालों के लिए तो मुक्ति (मोक्ष) उनके हाथ में स्थित हो जाती है अर्थात् अत्यन्त सुलभ हो जाती है।। 17।।

Hari is the entire world and this world itself is the form of Hari. continuous difference between the two For those who see, liberation (moksha) becomes within their hands, that is, it becomes very accessible. 17.

अभेदवादिनः केचिद्, भेदिनो बहवो मताः।

भेदाभेदधनाः केचिद्, दृष्टा भागवतास्त्रिधा॥ 18॥

कुछ लोग अभेदवादी होते हैं, कुछ लोग भेदवादी होते हैं और कुछ लोग भेदाभेदवादी होते हैं। इस प्रकार से संसार में तीन प्रकार के भक्त देखे जाते हैं।। 18।।

Some people are non-discriminatory, some people are discriminatory and some people are discriminatory. In this way three types of devotees are seen in the world. 18.

पिबन्तो हरिपादाम्बु, पश्यन्तो हरिमात्मनि।

हरावेव जगत्सर्वम्, पूज्या ध्येया मनीषिभिः॥ 19॥

भगवान हरि के चरणामृत (गंगाजल) का पान करने वाले एवं हरि को अपनी आत्मा में देखने वाले और हरि में ही सम्पूर्ण विश्व का अनुभव करने वाले संत महापुरुष विद्वानों के द्वारा पूज्य और ध्येय होते हैं।। 19।।

Saints who drink the nectar of Lord Hari's feet (Ganga water) and see Hari in their soul and experience the entire world in Hari are revered and revered by great scholars. 19..

हरिमात्मनि पश्यन्तो, हरावात्मानमेव च।

हरे रूपं जगत्सर्वम्, विज्ञानात्मा हरिः स्वयम्॥ 20॥

आत्मा में हरि को देखते हुए एवं हरि में आत्मा को देखते हुए तथा हरि में ही सम्पूर्ण संसार को अनुभव करते हुए विशेष ज्ञान से युक्त महापुरुष साक्षात् हरि रूप ही हो जाते हैं।। 20।।

Seeing Hari in the soul and seeing the soul in Hari and experiencing the entire world in Hari, the great man with

special knowledge becomes the actual form of Hari. 20..

तत्वदर्शनलाभाय, जगत्सृष्टं स्वयम्भुवा।

तत्र क्षमा नराः साक्षाद्, यदि निर्दोषमानसाः॥ 21॥

तत्व दर्शन के लाभ के लिए ब्रह्मा जी ने जगत की सृष्टि की है। जो व्यक्ति निर्दोष मन वाले होते हैं वे उस तत्व को आसानी से अर्थात् अत्यन्त सुगमता से प्राप्त कर लेते हैं।। 21।।

Lord Brahma has created the world for the benefit of Tatv Darshan. People who have an innocent mind attain that element easily, that is, with great ease. 21..

मनोदोषविशेषैस्तु, चेतः सद्गुणनाशिभिः।

निष्फलं मानुषं जन्म, पशवो मानुषास्ततः॥ 22॥

चित्त के सद्गुणों का नाश करने वाले विशेष मानसिक दोषों के कारण मनुष्यों का जन्म निष्फल हो जाता है और वे मनुष्य पशुतुल्य हो जाते हैं।। 22।।

Due to special mental defects that destroy the virtues of the mind, the birth of human beings becomes fruitless and they become like animals. 22..

जन्मना पशवः केचिद्, विप्रक्षत्रविशोऽपरे।

सुखार्थिनः परे शूद्रा, एडमूकाश्च केचन॥ 23॥

कुछ लोग जन्म से ही पशु होते हैं और दूसरे लोग जन्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य होते हैं। और कुछ दूसरे लोग सुख चाहने वाले शूद्र होते हैं और अन्य लोग जन्म से ही मूक बकरा (एक पशु) होते हैं।। 23।।

Some people are animals by birth and others are Brahmins, Kshatriyas and Vaishyas by birth. And some other people are Shudras who seek happiness and others are mute goats (an animal) by birth. 23..

प्रज्ञाविभेदान्मानुष्यं, भिन्नदृष्टं सहस्त्रधा।

बहवः समतावादास्तेभ्योऽधो हिंस्त्रचेष्ठिताः॥ 24॥

प्रज्ञा के भेद से मनुष्यता हजारों भेदों में विभक्त देखी जाती है। बहुत से लोग तो भेदों को नहीं मानते हैं और वे समतावादी होते हैं। और उनसे भी निम्न स्तर के वे लोग होते हैं जो हिंसक चेष्टाओं में लगे रहते हैं।। 24।।

Due to the difference of intelligence, humanity is seen divided into thousands of types. Many people do not believe in differences and are egalitarian. And there are people of even lower status than them who are engaged in violent activities. 24.

केचित् सेवापरा लोकाः, केचित्तु सुधनार्थिनः।

धनमात्रर्थिनः केचिद्भोगासक्तास्तथाऽपरे ॥ 25 ॥

कुछ लोग स्वभाव से ही सेवापरायण होते हैं। कुछ लोग सुख चाहने वाले होते हैं। कुछ लोग केवल धन चाहने वाले होते हैं और अन्य कुछ लोग भोगों में आसक्त होते हैं।। 25।।

Some people are service-oriented by nature. Some people are happiness seekers. Some people only want money and others are addicted to pleasures. 25..

विप्रक्षत्रविशश्शूद्राश्चतुर्वर्गगता नराः।

सहस्रधैव लक्ष्यन्ते, वरणीया तु विप्रता ॥ 26 ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्गों में मनुष्यता बँटी हुई है। और इन चारों भेदों के भी हजारों प्रकार होते हैं। परन्तु विप्रता (ब्रह्मणत्व) ही सबसे श्रेष्ठ है। इसलिए सभी को ब्राह्मणत्व का गुण अपनाने का प्रयास करना चाहिए।। 26।।

Humanity is divided into four classes – Brahmin, Kshatriya, Vaishya and Shudra. And also of these four types There are thousands of types. But Viprata (Brahmanity) is the best. Therefore everyone should try to adopt the qualities of Brahminism. 26..

विप्रा वृणन्ति देवत्वं, देवा अपि विधातृताम्।

विधातारो ब्रह्मभावं, हरिभक्तिन्तु साधवः ॥ 27 ॥

ब्राह्मण लोग देवत्व को वरण (प्राप्त) करना चाहते हैं। देवता भी ब्रह्मा का पद पाना चाहते हैं। ब्रह्मा (एक पद है) भी ब्रह्म भाव को पाना चाहते हैं किन्तु साधु (सन्त) लोग भगवान हरि की भक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि हरि भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ है।। 27।।

Brahmins want to attain divinity. Even the gods want to

attain the post of Brahma. Brahma (There is a verse) also want to attain Brahma Bhava but the sages (saints) attain the devotion of Lord Hari. Want to do. This proved that devotion to Hari is the best. 27..

वृणन्तश्चेतसा लोका, हीनत्वमपि दोषतः।

पापाधिक्या तु दस्युत्वं, सत्याद्भ्रष्टस्य दुर्दशाः ॥ 28 ॥

संसार के लोग दोष की हीनता (अभाव) को मन से चाहते हुए भी पूर्व पापों की अधिकता के कारण दस्यु (चोर, लुटेरे) बन ज्ञाते हैं। सत्य से भ्रष्ट व्यक्ति की सब ओर से दुर्दशा ही होती है।। 28।।

People of the world, despite desiring the absence of faults from their heart, become dasyus (thieves, robbers) due to excess of past sins. A person corrupted from truth faces misery from all sides. 28.

सत्यमिथ्यात्वमध्यस्थं, जगदेतच्चराचरम्।

मध्यस्था एव देवाश्च, परस्तात्परमेश्वरः ॥ 29 ॥

सम्पूर्ण सचराचर जगत सत्य, मिथ्या और मध्यस्थ इन तीन स्तरों में विभक्त है। मध्यस्थ प्रवृत्ति वाले अर्थात् ब्रम्ह को सत्य व जगत को मिथ्या मानकर व्यवहार करते हैं, वे ही देवत्व को प्राप्त होते हैं। परन्तु केवल ब्रम्ह को सत्य मानने वाले तो ब्रम्हत्व को प्राप्त होते हैं।। 29।।

This living world is divided into three levels: true, false and intermediate. Only those who have a mediatory nature are gods and God is beyond (above) all these three divisions. 29..

सुखमल्पं सत्यलोके, नृलोकस्य तु दृश्यते।

तिरश्चामपि लक्ष्यं तत्, कर्माधीना हि जन्तवः ॥ 30 ॥

सत्यलोक में भी सुख अल्प (कम) ही है। संसार का सुख तो प्रत्यक्ष ही देख रहे हैं। वह भी कम ही है। तिर्यक् योनि (कीट पतंग) का सुख भी हम देख ही रहे हैं। इस प्रकार सभी प्राणी अपने कर्म के अधीन होते हुए अल्प सुख ही पाते हैं। सुख की निरंतरता तो भगवद्भक्ति में ही है।। 30।।

Even in Satyalok, there is little happiness. We are seeing the happiness of the world directly. That too is less. We are also

seeing the happiness of Tiryak Yoni (Insect Kite). In this way, all living beings, being subject to their karma, get only a little happiness. Continuity of happiness lies only in devotion to God. 30.

वेदान्तार्थो विश्वमेतद्, विश्वात्मस्वामिनाधृतम्।

नीयमानम्भुज्यमानं, कृतिनाम्मुक्तये कृतम्॥ 31॥

केवल मनुष्य ही वेदान्त मार्ग का अनुसरण करके शुभ कर्मों के द्वारा मुक्त हो सकते हैं। इस विश्व को विश्व की आत्मा प्रभु (स्वामी) नारायण ने अपने द्वारा धारण किया हुआ है। वे भगवान हरि ही कर्मयोगियों को मुक्ति प्रदान करने के लिए इस संसार में लाते हैं और इसका भोग कराते हैं।। 31।।

This is the detailed meaning (essence) of the entire world Vedanta. Lord of the soul of this world (Swami) Narayan has worn it by himself. It is Lord Hari who brings Karma Yogis into this world to provide them salvation and makes them enjoy it. 31..

विश्वमेतत्स्वबोधार्थम्, विश्वरुपेशदर्शनम्।

कृतिनामीशसाक्षान्त्वम् गुणसाम्यन्तु पापिनाम्॥ 32॥

यह विश्व आत्मज्ञान कराने के लिए है। विश्वरूप में ईश्वर का दर्शन कराने के लिए है। पुण्यात्मा एवं कृती प्राणी इस विश्व में ईश्वर को देखते हैं। और पापी लोग गुणों के तारतम्य से संसार को अपने लिए भोग्य समझते हैं।। 32।।

This world is meant for enlightenment. It is to give the darshan of God in the universal form. Virtuous souls and active beings see God in this world. And sinful people consider the world as their enjoyment due to the harmony of virtues. 32..

प्राज्ञाः कर्ममयं विश्वं, सन्तः श्रद्धाऽऽस्पदं सदा।

विदुर्जडा भोगभूमिं, क्लेशस्थानं च तात्विकम्॥ 33॥

प्राज्ञ पुरुष इस विश्व को कर्ममय मानते हैं। संत लोग इसे अपनी श्रद्धा का विषय मानते हैं। जड़ (मूढ़, मूर्ख) लोग इसे भोग भूमि मानते हैं और वास्तविक रुप में तो संसार क्लेशों (कष्टों) का ही स्थान है।। 33।।

Wise men consider this world to be full of karma. Saints consider it a matter of their reverence. Stupid (foolish)

people consider it to be the land of pleasures and in reality the world is a place of sufferings (sufferings). 33.

भवान् किंस्विद् वेद विश्वं, चतुर्षु बहिरेव वा।

क्षुद्रस्वार्थमयं किं वा, किंस्विन्मांसं सलोहितम्॥ 34॥

आप इस विश्व को किस रूप में मानते हैं। ऊपर कहे गए चार रूपों में या उससे बाहर अथवा आप इसे अपने क्षुद्र स्वार्थ के रूप में देखते हैं अथवा रक्त (खून) से सने हुए मांस की तरह देखते हैं।। 34।।

How do you perceive this world? In or out of the four forms mentioned above or you see it as your petty selfishness or you see it as flesh stained with blood. 34.

विश्वस्मिन् विशदा दृष्टिः, सदैव सुकृतात्मनाम्।

स्थूला दुष्कृतिनां दृष्टा, मन्दानां शून्यता सती॥ 35॥

इस विश्व के प्रति पुण्यात्माओं (धर्मात्माओं) की सदा ही विशद (स्वच्छ एवं स्पष्ट) दृष्टि रही है। और मन्द (कम बुद्धि वाले) व्यक्तियों की इस विश्व के प्रति शून्य दृष्टि होती है। वे ईश्वर के रूप को समझ ही नहीं पाते हैं।। 35।।

The virtuous souls (righteous souls) have always had a clear (clean and clear) vision towards this world. And people with low intelligence have zero vision towards this world. They consider this world to be void. 35.

काष्ठपट्टं विश्वमेतद् गणितादीह दृश्यताम्।

सर्ववेदान्तनिष्कर्षः, प्रत्यक्षम्भगवानपि॥ 36॥

इन समस्त विचार दृष्टियों की गणना से यह विश्व काष्ठ फलक (लकड़ी का पटरा) जैसा प्रतीत होता है। यह विश्व सम्पूर्ण वेदान्त का निष्कर्ष (सारतत्व) है और प्रत्यक्ष भगवान का रूप भी है।। 36।।

By calculating all these viewpoints, this world appears like a wooden plank. This world is the conclusion (essence) of the entire Vedanta and is also the direct form of God. 36..

दृग्दृश्यमखिलं द्रष्टा, साक्षात् सर्वम्प्रदृश्यते।

विश्वात्मा परमात्मा च, कृतिभिः पुण्यशालिभिः॥ 37॥

यह सम्पूर्ण विश्व दृष्टि, दृश्य और द्रष्टा के रूप में साक्षात् दिखाई पड़ता है। किन्तु पुण्यात्मा कर्मयोगियों को यह विश्व परमात्मा और विश्वात्मा के रूप में प्रतीत होता है।। 37।।

This entire world is visible in the form of vision, sight and seer. But to the virtuous karma yogis this world appears as God and the Universal Soul. 37.

सुशिक्षिताः सुसंगेन, ज्ञानवैराग्यशालिनः।

विवेकिनो विश्वकर्तुः, गृह्णन्ति गुणगौरवम्॥ 38॥

अच्छी शिक्षा पाए हुए, ज्ञानी, वैराग्यशाली एवं विवेकी लोग सत्संग के द्वारा विश्वकर्ता परमात्मा के गुणगौरव को ग्रहण करते हैं।। 38।।

Well-educated, knowledgeable, ascetic and wise people embrace the glory of God, the creator of the world, through satsang. 38.

अत्रैव पशवो बद्धाः, क्लेशजालधृताः परे।

सुखसौभाग्यवन्तश्च, केचिन्निरयपीडिताः॥ 39॥

इसी संसार में बहुत विभिन्नता है। यहीं पर पशु लोग बंधे हुए हैं। दूसरे लोग कष्टों के जाल से घिरे हुए हैं। कुछ लोग सुखी और सौभाग्यशाली हैं और कुछ लोग नरक में कष्ट पा रहे हैं अर्थात नरक तुल्य कष्ट पा रहे हैं।। 39।।

There is a lot of diversity in this world. This is where the animal people are tied. Others are surrounded by a web of suffering. Some people are happy and fortunate and some people are suffering in hell, that is, they are suffering like hell. 39..

निसर्गादेव विश्वस्मिन्, विज्ञानगुणगौरवात्।

देवत्वं देवदेवत्वं, भुञ्जन्ते भाग्यशालिनः॥ 40॥

किन्तु इस विश्व में कुछ भाग्यशाली लोग विज्ञानरूप रस्सी की महिमा से अर्थात् ज्ञान विज्ञान से युक्त होने कारण स्वभाव से ही स्वाभाविक रूप से देवत्व एवं ईश्वरत्व के आनन्द का भोग करते हैं।। 40।।

But in this world, some fortunate people enjoy the joy of divinity and divinity naturally by their nature due to the

glory of the rope in the form of science i.e. being equipped with knowledge and science. 40..

सत्यं नारायणं देवं, न विदुर्ये नृदेहिनः।

द्वाभ्यां च पुण्यपापाभ्यां, पशवस्ते न संशयः॥ 41॥

जो मनुष्य सत्य स्वरूप नारायण देव को नहीं समझ सके वे पुण्य और पापों के रहते हुए भी साक्षात् पशु रूप हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।। 41।।

There is no doubt that those people who could not understand the true form of Narayan Dev, despite their virtues and sins, are in full form animals. 41..

आराद् विश्वात्मविश्वेशं, वेदनार्था नृदेहता।

लब्ध्वापि मानवीम्प्रज्ञां, पापैस्तैर्विफलीकृता॥ 42॥

दूर में रहते हुए भी अत्यन्त निकट रहने वाले विश्वात्मा और विश्वेश भगवान हरि को समझने के लिए ही मनुष्य शरीर मिला है। मनुष्यों ने इस मानवीय प्रज्ञा को प्राप्त करके भी पापों के द्वारा उस प्रज्ञा को विफल बना दिया है।। 42।।

To understand the World Soul and Visvesh Lord Hari who is very close despite living far away. We have got the human body only for this. Even after attaining this human intelligence, humans have made that intelligence fail through sins. 42.

खरः पशुस्तृणं भुङ्क्ते, देवालयसमीपगम्।

विप्रः कश्चिद् धनं वष्टि म्लेच्छानुग्रहनिर्गतम्॥ 43॥

जैसे देवालय (मंदिर) के समीप गधे आदि पशु केवल घास ही चरते हैं उन्हें देवता से कोई मतलब नहीं होता। विचारवान मात्र देवदर्शन से ही कृतार्थ हो जाता है। विद्वान बाह्मण सामने पड़े धन को देखकर भी लोभ नहीं करते, वे निष्पृह रहकर भजन करते हैं।। 43।।

A donkey grazes grass near the temple. A Brahmin receive money by the grace of a lowly person. 43.

खरोऽत्र सुकृती देशाद्, विप्रः संगात्तु दुष्कृती।

भेदमेतं न विविदुः, प्राग्दोषात्तुल्यदर्शनाः॥ 44॥

कभी-कभी पूर्वजन्मों के संस्कारों के कारण अच्छे लोगों के सम्पर्क में रहते हुए भी मानव बुरे स्वभाव को छोड़ नही पाते तथा अच्छे विचारों को ग्रहण नहीं कर पाते। और कभी पहले जन्मों के अच्छे संस्कार वाला व्यक्ति दुष्ट लोगों के बीच रहता हुआ भी संत स्वभाव को प्रकट कर लेता है, यह सब पूर्व जन्मों के पुण्य और पाप के संस्कारों के कारण होता है।।। 44।।

That donkey is a virtuous soul (religious soul) because of the sanctity of the place and that Brahmin is a sinner because of the evil of association. Due to previous guilt, egalitarian people do not know this difference. 44.

पुण्यं दुष्कृतवद्वेत्ति, पापवत्सुकृतं खलः।

यत्र देशे बहुखलास्तत्र श्रीशोऽप्यकोमलः॥ 45॥

विचारवान व्यक्ति बूरे कृत्यों में भी मुख्य अच्छाई को देख लेते हैं उनसे शिक्षा ले लेते हैं, दुष्ट व्यक्ति अच्छाइयों में भी पाप कर्म देखते हैं। श्रीमान ज्ञानी लोग दुष्टों के बीच में रहते हुए भी कीचड़ में कमल की तरह अपनी कोमलता, शीतलता बनाये रखते हैं वे अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते।। 45।।

The evil person (sinful person) considers virtue as sin and sin as virtue. In a place where there are many wicked people, even God becomes harsh. 45.

विश्वं हरिं विना केचिद्, विश्वहीनं हरिम्परे।

शून्यं शून्यधियः सर्वम्, द्विपदाः पशवो विदुः॥ 46॥

कुछ लोग विश्व को हरि के बिना मानते हैं और कुछ लोग हरि को विश्व से विहीन मानते हैं। और शून्य बुद्धि वाले दो पैर वाले पशु सम्पूर्ण विश्व को शून्य समझते हैं।। 46।।

Some people consider the world to be without Hari and some people consider Hari to be devoid of the world. And two-legged animals with zero intelligence consider the entire world to be zero. 46..

जनाः पशुधियः केचित्, पशवः केऽपि धर्मिणः।

कर्मभेदाज्जन्मभेदो, यतनीयं शुभाप्तये॥ 47॥

कुछ मनुष्य भी पशु बुद्धि वाले होते हैं और कुछ पशु भी धर्मशील (धार्मिक स्वभाव बाले) होते हैं। कर्म के भेद से ही जन्म में भी भेद होता है। है

इसलिए हमेशा शुभ (श्रेष्ठ और मंगल) को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।। 47।।

Some humans also have animal intelligence and some animals also have religious nature. There is difference in birth also due to difference in karma. That's why one should always try to achieve auspicious (best and auspicious) things. 47..

अप्रमादपराः केचिद्, बहवस्तु प्रमादिनः।

पूर्वकर्मवशं दृष्टं, सर्वेषाम्प्राणिनाम्मनः॥ 48॥

कुछ मनुष्य अप्रमादी (सावधान, सतर्क) होते हैं और कुछ लोग प्रमादी (आलसी) होते हैं। सभी प्राणियों के मन (विचार) में यह भेद उनके पूर्व कर्मों के कारण दिखाई देता है।। 48।।

Some human beings are apramadi (careful, alert) and some people are pramadi (lazy). This difference is visible in the minds (thoughts) of all living beings due to their previous actions. 48.

नृणाम्परमकल्याणम्, बहुशः प्राह नारदः।

सत्यनारायणालम्बं, सत्यनारायणोक्तितः॥ 49॥

सत्य स्वरूप नारायण के कथनानुसार सत्य स्वरूप नारायण का आश्रय ही मनुष्यों के परम कल्याण का कारण है, ऐसा देवर्षि नारद ने बहुत बार कहा है।। 49।।

According to the statement of Satya Swaroop Narayan, shelter of Satya Swaroop Narayan is the ultimate salvation for human beings. This is the reason for welfare, Devarshi Narad has said this many times. 49.

सत्यं सत्यम्पुनः सत्यम्, उद्धृत्य भुजमुच्यते।

धर्मादर्थश्च कामश्च, धर्मो ध्येयः सदा बुधैः॥ 50॥

यह सत्य है, सत्य है और पुनः सत्य है। हाथ उठाकर मैं यह बात कह रहा हूँ। वह सत्य यह है कि धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। इसलिए ज्ञानी लोग धर्म को ही धारण करते हैं। उसी धर्म का ध्यान भी करते हैं।। 50।।

It is true, true and true again. I am saying this by raising my hand. The truth is that it is only through religion that wealth and work are achieved. That is why knowledgeable people follow religion only. We also meditate on the same religion. 50..

पंचाशतैव विश्वात्मा, परमात्माऽवधार्यताम्।

प्रायेण चपलं चेतो, दुष्कृतेभ्यः प्रवार्यताम्॥ 51॥

इन पचास श्लोकों से परमात्मा को विश्व की आत्मा के रूप में समझें। साथ ही अपने चंचल चित्त को पाप कर्मों से दूर रखें।। 51।।

Understand God as the soul of the world through these fifty verses. Also keep your restless mind away from sinful activities. 51..

यत्सत्यं तदुपासीत, सन्दिधन्तु विमृश्यताम्।

असत्यं सर्वथा हित्वा, स्वं सत्यमवधार्यताम्॥ 52॥

जो सत्य है उसकी उपासना करें। उसी का ध्यान करें एवं उसी के विषय में विचार करें। असत्य को पूरी तरह छोड़कर अपने सत्य स्वरूप पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।। 52।।

Worship what is true. Meditate on that and think about that. Leave aside untruth completely and concentrate on your true nature. 52..

ज्ञानकर्ममयं स्वं ये, न विदुर्जडजन्तवः।

तैरप्यवहितैर्भाव्यं, सत्यालम्बाय सन्ततम्॥ 53॥

जो जड़ प्राणी अपने ज्ञानमय एवं कर्ममय स्वरूप को नहीं जानते हैं उन्हें भी सत्य का आश्रय लेने के लिए सदा तत्पर एवं सावधान रहना चाहिए।। 53।।

Even those inanimate beings who do not know their knowledgeable and action-oriented nature should always be ready and alert to take shelter of the truth. 53..

सत्यं स्वं त्रिजगत्सत्यं, सत्यमूलं न विस्मरेत्।

तस्यैव जन्म सफलं, वृथा जन्म प्रमादिनाम्॥ 54॥

सत्य को, स्वयं को, तीनों लोकों के सत्य को और सत्य के मूल को कभी

भी नहीं भूलना चाहिए। जो इन्हें सदा याद रखता है उसी का जन्म सफल होता है एवं प्रमादी तथा आलसी लोगों का जीवन व्यर्थ हो जाता है, यह मानना चाहिए।। 54।।

One should never forget the truth, oneself, the truth of the three worlds and the origin of truth.It should be believed that the one who always remembers these, his birth becomes successful and the life of careless and lazy people becomes useless. 54..

अप्रमादाय शास्त्रणि, सर्वाण्येव हितानि च।

हेयाः प्रमादिनः सद्भिर्मनो देयम्पराप्तये ॥ 55 ॥

मानव जीवन में इसी अप्रमाद (सावधानी, सतर्कता) की प्राप्ति के लिए ही सभी शास्त्र हैं। वे शास्त्र मानव के लिए हितकारी भी हैं। सज्जनों को चाहिए कि वे प्रमादी (आलसी, अकर्मण्य) लोगों को अपने से दूर रखें और परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें। अर्थात् भगवान हरि की प्राप्ति के लिए अपने मन को लगाएँ।। 55।।

All the scriptures are there only for achieving this Apramad (caution, vigilance) in human life. Those scriptures are also beneficial for humans. Gentlemen should keep away careless (lazy, indolent) people from themselves and try to attain God. That is, concentrate your mind to attain Lord Hari. 55.

सर्वात्मना हरिः सेव्यः, सर्वभूतहितात्मना।

तदात्मनैव कल्याणमहितं विषयात्मना ॥ 56 ॥

सभी प्राणियों का हित चाहने वालों को सर्वात्मभाव से (पूरे मनोयोग से) भगवान हरि की सेवा करती चाहिए। तदाकार (ईश्वर निष्ठ) मन वालों का ही कल्याण होता है और विषयी (सांसारिक विषयों में लिप्त) मन वालों के जीवन में अहित ही होता है।। 56।।

Those who want the welfare of all living beings should serve Lord Hari with all their soul (with full devotion). Only those with a Taadakar (devoted to God) mind get welfare and only harm occurs in the lives of those with a Vishaya (indulgent in worldly matters) mind. 56..

आपदां कथितः पन्था, इन्द्रियाणामसंयमः।

तज्जयः सम्पदाम्मार्गो, येनेष्टं तेन गम्यताम्॥ 57॥

इन्द्रियों की उच्छृंखलता (मनमानी) को आपत्तियों का मार्ग कहा गया है। उन इन्दियों को जीत लेना सम्पूर्ण सुख समृद्धि का मार्ग कहा गया है। अब आप लोगों को जो मार्ग अच्छा लगे अपना लीजिए।। 57।।

The disorderliness of the senses (arbitrariness) has been called the path of objections. Conquering those senses has been said to be the path to complete happiness and prosperity. Now you people, adopt whatever path you like. 57..

सदयः प्रददौ श्रीशः, सद्बोधायेन्द्रियैर्मनः।

अप्रमादेन विज्ञेयं, सर्वरूपम्परात्परम्॥ 58॥

लक्ष्मीपति परमदयालु भगवान नारायण ने हमें सत्य का ज्ञान कराने के लिए ही इन्दियों के साथ मन भी प्रदान किया है। अतः हमें अप्रमादी (सतर्क, सावधान) बनकर सर्वरूप परात्पर ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।। 58।।

Lord Lakshmi, the most merciful Lord Narayana has given us the mind along with the senses to give us the knowledge of truth. Therefore, we should become apramadi (vigilant, careful) and attain the knowledge of the Supreme Brahman. 58..

परात्परत्वं स्वस्यापि, तथैव परमात्मनः।

सर्वकर्ममयत्वं च, विस्मरन्ति न साधवः॥ 59॥

स्वयं का एवं परमात्मा का परात्परत्व एवं सर्वकर्ममयत्व सज्जन लोग कभी भी नहीं भूलते हैं।। 59।।

Gentle people never forget their own and God's transcendence and omnipotence..59.

सत्यं नारायणं श्रीशं, हृदये दधतां सताम्।

विमुक्तये जगत्सृष्टं, विमोहाय दुरात्मनाम्॥ 60॥

दुरात्माओं की बातों में न फंस कर सज्जन लोग अपनी आत्मा में

सत्यनारायण को धारण किये रहते हैं। और मोह माया से सदा मुक्त रहकर भव सागर से पार होकर परमशांति का अनुभव करते हैं।। 60।।

For the liberation of the good people who have Satyarup Lakshmipati Narayan in their heart and the evil ones. God has created this universe only to captivate the souls (sinners). 60.

सत्यनारायणकथा, सर्वाऽपि कुधियां वृथा।

विमुक्तये तु सुधियां, योग्यता फलकारिणी॥ 61॥

सत्यनारायण भगवान की यह सम्पूर्ण कथा कुमति (दुर्बुद्धि) वालों के लिए व्यर्थ है और सद्बुद्धि वालों की मुक्ति के लिए है। किसी भी व्यक्ति की योग्यता ही फल (परिणाम) को प्रदान करती है।। 61।।

This entire story of Lord Satyanarayan is useless for those with weak intelligence and is for the salvation of those with good intelligence. It is the ability of any person that provides results. 61..

सुयोग्यं जीवनं कर्तुं, स्मर्तुं श्रीशं मनो जयेत्।

विपदेवामनस्कानां, विषयात्मकुमेधसाम्॥ 62॥

अपने मानव जीवन को सुयोग्य बनाने के लिए और लक्ष्मीपति नारायण का स्मरण करने के लिए एवं अपने मन पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि मन को न जीत सकने वाले एवं विषयी तथा दुर्बुद्धियुक्त मानवों को जीवन में विपत्ति ही मिलती है।। 62।।

To make our human life worthy, we should remember Lakshmipati Narayan and try to conquer our mind. Because people who cannot conquer the mind and are sensual and ill-informed face only calamities in life. 62.

नारायणस्मरणशान्तमनोरथानां,

सद्भावमर्दितजडाशयदुष्कथानाम्।

दोषप्रणाशकृतये तु कृता कथेयं,

चेतः समाश्रयतु शुभ्रधियान्तु सेयम्॥ 63॥

भगवान नारायण के स्मरण से जिनके सभी मनोरथ शान्त हो गए हैं। तथा सत्य की भावना से जिन्होंने अपने जड़ हृदय में स्थित बुरी

(अकल्याणकारी) कथाओं को समाप्त कर लिया है उनके दोषों का नाश करने के लिए यह कथा बनाई गयी है। शुद्ध बुद्धि वाले इस कथा को अपने चित्त में धारण करें और कल्याण के भागी बनें।। 63।।

Whose all desires are satisfied by the remembrance of Lord Narayana. And in the spirit of truth,this story has been created to destroy the evils of those who have eliminated the bad stories present in their hearts. Those with pure intellect should keep this story in their mind and become partakers of welfare. 63.

!! इति श्रीसत्यनारायण कथामृतम् सम्पूर्णम् !!

॥ मोक्षोपाय ॥

मन पंचायुध धर चिन्तन कर। भव सागर से फिर सत्वर तर।।
क्रोध लोभ ममता मद मत्सर। निज से कर परिहार असमसर।। 1।।
वासस्थान निरन्तर हर उर। जिनका उनका सेवक बन फुर।।
रजनीचर सरसीरुह शशिकर। निज जन मानस हंस निरन्तर।। 2।।
कैवल्यद सुररक्षण तत्पर। शरणागत जन मीन महासर।।
लक्ष्मी रमणाच्युत विश्वेश्वर। छवि सरितेश कृष्ण परमेश्वर।। 3।।
ऐसे राघव का पद उत्पल। अब बन भ्रमर विरहित सकल मल।।
अभिलाषा यदि भव तरने की। निज को बहुत विमल करने की।। 4।।
उपर्युक्त को तो धारण कर। सज्जन का अनुसरण और कर।।
इससे तू भव तर जायेगा। तुझे मोक्ष पद मिल जायेगा।। 5।।

॥ हरि-पंचक ॥

अहिपतिशायी चक्री खगपतिगामी नलिननयनधारी।
गदकरिहरि विद्याहरिकानन जनमन अधीसकलहारी।।
दुखपुंज अनल सुखपुंज धान्यधन कनककशिपुवधकारी।
जनमनमीननीर अघहारी नमन करूँ मैं सुखकारी।। 1।।

अम्बक अम्बुज अलकपुंज तनु मेचक अहिसमशुभधारी।
वदन मदन शतकोटि सुछविहर हरमन पंकज मधुहारी।।
स्वभू तत्वज्ञाता ज्ञानीप्रिय ज्ञानगम्य तन घन दुतिहारी।
जनमनमीननीर अघहारी नमन करूँ मैं सुखकारी।। 2।।

कमलापति त्रिभुवनपति दुर्गम भव जलनिधि निस्तारण।
आदि पुरुष दुर्गम्य चतुर्भुजधारी त्रिभुवन कारण।।
कुन्दकुसुमरद पीतवस्त्रधर द्विजपद वक्षस्थलधारी।
जनमनमीननीर अघहारी नमन करूँ मैं सुखकारी।। 3।।

क्षीराम्बुधिवासी सुपद्मधर भक्त कोक मृगलांछन।
मोह महीधर कुलिश गदाधर कम्बुग्रीव चन्द्रानन।।
अम्बुज गर्भ चरण चरणज अरविंद पंखुडी दुतिहारी।
जनमनमीननीर अघहारी नमन करूँ मैं सुखकारी।। 4।।

निजजनमन मानसमराल अरु भक्त कमल निशिनाशी।
भव संभव कर्ता हर्ता समदर्शी घट-घटवासी।।
जगरक्षक मुनि कुमुदकलाधर देवद्विजहितकारी।
जनमनमीननीर अघहारी नमन करूँ मैं सुखकारी।। 5।।

॥ भगवद् वैभव ॥

त्रिलोकेश्वरायाव्ययाजयाय, भवाम्बोध्यगस्त्याय भक्तप्रियाय।
अजायारविन्दाम्बकायादभुताय, नमः शाश्वतायाच्युतायाक्षराय।।

(1)

कारुण्यसागर सद्गुणाकर परमनागर भूपते।
गोविन्द अज अरविन्द मुख सुखसिन्धु प्राणद गोपते।।
पापौघमुंजानल, विमल, मलधाम कलि दादुर अहे।
आनन्दघन मन भृंग तव पदकंज संतत रत रहे।।

(2)

राकेशशेखर मानसाम्बुज चंचरीक प्रजापते।
लोकेश दुःख अशेषनाशक असुर त्रासक श्रीपते।।
पाथोज दृग दशमौलिमृगमृगनाथ श्रीरघुनाथ हे।
संसारसागर बोहिताच्युत स्वजनसर जलनाथ ते।।

(3)

गोपाल जनमानस मराल उरस्थमाल विशाल है।
श्यामाम्बुधर निभ शुभकलेवर मलय चर्चित भाल है।।
सर्वांगभूषण सकल भूषित सहित पुष्प तमाल है।
ऐसे महीधर पदकमल में बार शत नत भाल है।।

(4)

धृत ऊर्ध्वपुण्ड्रललाट मृगपतिवाहनाचल धर सदा।
आनन्दप्रद अतिस्वच्छरद गद द्विरद पंचानन सदा।।
निज भक्त इन्दीवर दिवाकर सन्तगण पालक सदा।
इस तुच्छ जन का भी हृदय गाता रहे हरि हरि सदा।।

(5)

संसार पालक नंद बालक कंस घालक हे प्रभो।
प्रणतार्तिहर कल्याणकर भवसिन्धुबोहित हे विभो।।
निज दास रक्षक जननि सम मम नाथ होकर के मुदा।
इस तुच्छजन को स्वपद पंकज भृंग करलो धृतगदा।।

(6)

प्रभु प्रेरणा से ही मनुज कुछ कार्य करता है कभी।
जड़ जंगमादिक जीव प्रभु के क्योंकि आश्रित हैं सभी।।
हरि के अनुग्रह के बिना नर कर न सकता कुछ कभी।
कविश्रेष्ठ वन्दन पूर्व हरि का इसलिए करते सभी।।

(7)

जगदीश्वरेच्छा से उदित शुभ भाव कुछ मन में हुआ।
फिर उस अनादि अखण्ड प्रति कुछ कथन का साहस हुआ।।
आशा मुझे है यदि त्रिलोकेश्वर अनुग्रह साथ हो।
तो इस कुसुमनव माल से जनमन सुकण्ठ सनाथ हो।।

(8)

कलि में नरों की बुद्धि, ईश्वर प्रति कभी लगती नहीं।
संस्कार मनुजों के कभी हरि भक्त सम होते नहीं।।
तन और मानस मानवों के बहुत दुर्बल हो रहे।
इस हेतु उन्नति के शिखर पर चढ़ मनुज फिर गिर रहे।।

(9)

तत्वार्थ विज्ञ मनुष्य दुर्लभ हैं बहुत संसार में।
पाखण्ड पूर्ण अनेक मानव पर सुलभ संसार में।।
बस वाक्य रचना देखकर नर को न झुकना चाहिए।
तत्वार्थ विरहित बात को विष ही समझना चाहिए।।

(10)

यह विश्व ईश्वर शक्ति से है सत्य भासित हो रहा।
पर है नितान्त असत्य मुनि मन भी विमोहित हो रहा।।
कल्याण है नर का इसी में प्रेम हरिपद में करे।
फिर भव जलधि से धेनु पद सम शीघ्र ही वह निस्तरे।।

(11)

भवसिन्धु हित बोहित मनुजतन ईश ने तुमको दिया।
करके अनुग्रह हित तुम्हारे क्या न प्रभु ने है किया।।
फिर भी अगर तू छोड़ मत संगति महा अज्ञान की।
तो है कमी किसकी बता तेरी कि श्रीभगवान की।।

(12)

गीता पढ़ो श्रीकृष्ण ने क्या सव्यसाची से कहा।
जो विश्व में समता रखे वह भक्त मेरा है महा।।
पर काम क्रोध तजे बिना समता न आ सकती कभी।
जैसे बिना जल के तरणि स्थल में न चल सकती कभी।।

सत्य सनातन धर्म

वेदों में है मूल, पुराणों में जिसकी व्याख्या है।
उपनिषदों में जिसका चिन्तन, और सरस आख्या है।।
स्मृतियों में जिसकी स्मृति, सफल विधान बनी है।
जिसकी असिधारा वीरों का चिर आवाहन बनी है।।
राम कृष्ण का जीवन जिसकी, शाश्वत परिभाषा है।
वही हमारा धर्म सनातन, धरती की आशा है।। 1 ।।
दृष्टा ऋषियों ने भूतल को, मुक्ति का ज्ञान दिया था।
ऋषि तथा गत महावीर ने, जिसका दान किया था।।
रामायण जय काव्य सभी हैं, जिसकी विजय सुनाते।
जिसकी सेवा हित परमेश्वर, स्वयं धरा पर आते ।।
जो जीवन को सरस, धरा को स्वर्ग बना देता है।
वही हमारा धर्म सनातन, जयी काल जेता है।। 2 ।।
जिससे पृथक मनुजता का, कुछ भी अस्तित्व नहीं होता है।
नर से नारायण बनना, सम्भव जिससे ही होता है।।
पशुपक्षी जड़ जंगम सबका, जिसने पूरा ध्यान रखा है।
देश अवस्था काल पात्र लखि, मानव कर्म विधान रचा है।।
ज्ञान भक्ति सत्कर्म समन्वित, बहती जिसकी सुरसरि धारा।
वही हमारा धर्म सनातन, पावन हिन्दु धर्म हमारा ।। 3 ।।
संतों ने तिल-तिल जल करके, सतियों ने हो करके स्वाहा।
वीरों ने निज शीश चढ़ाकर, जिसका अक्षय गौरव चाहा ।।
जिसके हित सम्राटों ने तज, राजभवन को पर्णकुटी ली।
जिसकी रक्षा हित यतियों ने, धूनी तज दी खड्ग उठा ली ।।
रक्षक जिसके शिवा भवानी, हैं तुलसी ने जिसको गाया।
वही हमारा धर्म सनातन, कल्पवृक्ष सी जिसकी छाया ।।

लेखक परिचय

भारतवर्ष के प्रतिष्ठित मूर्धन्य विद्वान् मेरे पूज्य पितामह श्री डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय (पं. विष्वक्सेनाचार्य गुरुजी) श्री डॉ.विन्ध्येश्वर पाण्डेय व्याकरण, न्याय, वेदान्त, ज्योतिष आदि अनेकों शास्त्रों के तलस्पर्शी विद्वान थे। उनका जन्म दिनांक 23 मई 1930 ई. में तत्कालीन बिहार (वर्तमान में झारखण्ड) राज्य के गुमला जिला अन्तर्गत सिसई प्रखण्ड के कुलकुप्पी ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री कृष्णदत्त पाण्डेय और माता का नाम श्रीमती विद्यावती देवी था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा 'सनातन संस्कृत पाठशाला, लोहरदगा (झारखंड) से हुई थी। प्रखर प्रतिभा के धनी श्री गुरु जी ने 14 वर्ष की आयु में ही सम्पूर्ण श्रीमद्भगवद्गीता कंठस्थ कर ली। रांची संस्कृत कॉलेज, रांची से व्याकरणाचार्य की शिक्षा प्राप्त करके वे भरनो हाई स्कूल में 5 वर्षों तक संस्कृत शिक्षक के रूप में पदस्थापित रहे। इसके पश्चात संस्कृत शास्त्रों के गम्भीर तत्वों में विशेष अभिरुचि के कारण उन्होंने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय (वर्तमान में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय) से नव्यन्यायाचार्य एवं विद्या वारिधि (पी. एच.डी.) की उच्च शिक्षा प्राप्त की। कालान्तर में विभिन्न संस्कृत विद्यालयों में अपनी सेवा देते हुए वे उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिला के झलोखर ग्राम में स्थित संस्कृत महाविद्यालय में 26 वर्ष प्रधानाचार्य पद पर रहते हुए 1991 में सेवानिवृत्त हुए। इसके पश्चात वे सात्विक एवं सदाचार परायण जीवन से समाज को प्रेरणा देते हुए श्रीधाम वृंदावन के रंग मंदिर में रहकर अनेक ग्रंथों का प्रणयन करते रहे। उन्होंने लगभग 20 ग्रंथ एवं सैंकड़ों निबन्ध लिखे। उनके ग्रंथों में शास्त्रीयता, राष्ट्रीयता एवं शिक्षा में भारतीयता आदि अनेक विषयों का सुन्दर समावेश उपलब्ध है। 'श्रीसत्यनारायणकथामृतम्' उनकी अन्तिम रचना है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मेरे पूज्य पितामह नाड़ी विज्ञान, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा का भी व्यवहारिक ज्ञान रखते थे। 93 वर्ष की अवस्था में 10 मई 2023 को अपने वर्तमान निवास स्थान लोहरदगा में उनका बैकुण्ठवास हो गया। उन्होंने अपने ज्ञानबल एवं तपोबल से भारतवर्ष के लोगों का मार्गदर्शन किया है। ऐसे तपोनिष्ठ, त्यागमूर्ति, परमवैष्णव संत श्री गुरु जी को हमारा सादर वंदन है।

पं. अभिनव आनन्द पांडेय
सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य
लोहरदगा (झारखंड)